Bundelkhand Journal of Academic Research

पर्यटन का स्थानीय संस्कृति और सामाजिक संरचना पर प्रभाव : आगरा महानगर के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

कृपान्ती लोधी[1], डॉ. एकता[2]

1. **शोधार्थिनी (समाजशास्त्र),** समाजशास्त्र विभाग, बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय आगरा, उत्तर प्रदेश।
2. **असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र),** समाजशास्त्र विभाग, बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय आगरा, उत्तर प्रदेश।

(**Corresponding Author:** unity2520@gmail.com)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23016581

सारांश

उत्तर–आधुनिक समाज में पर्यटन केवल एक भौगोलिक विस्थापन नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पुनर्गठन की एक अत्यंत जटिल और द्वंदात्मक परिघटना है। विश्व धरोहरों के केंद्र 'आगरा महानगर' के विशेष संदर्भ में, यह शोध पत्र पर्यटन और स्थानीय सामाजिक संरचना के मध्य अंतर्निहित अंतर्विरोधों का सूक्ष्म समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। एक ओर पर्यटन वैश्वीकरण और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से सामाजिक समावेशिता तथा महिला सशक्तिकरण (विशेषकर पच्चीकारी और जरदोजी से जुड़ी महिला कारीगरों के संदर्भ में) को उत्प्रेरित करता है। वहीं दूसरी ओर, नव–उदारवादी बाजार व्यवस्था के दबाव में यह सांस्कृतिक व्यवसायीकरण, 'मंचित मौलिकता' और पारंपरिक मूल्यों के विघटन जैसी गंभीर चुनौतियों को जन्म देता है। टैल्कॉट पार्सन्स के संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण, मार्क्सवादी 'अलगाव' के सिद्धांत और नारीवादी परिप्रेक्ष्य का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि आगरा में अनियंत्रित 'मास टूरिज्म' स्थानीय कारीगरों के आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक क्षरण का कारण बन रहा है। निष्कर्षतः यह आलेख समुदाय–आधारित पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण के मध्य एक समतामूलक संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देता है।

आलेख सूचना			
प्राप्त: 30 अगस्त, 2026	**स्वीकृत:** 09 सितंबर, 2026	**प्रकाशित:** 30 सितंबर, 2026
सारणी: 00	**चित्र एवं ग्राफ:** 00	**स्रोत एवं संदर्भ:** 11
मुख्य शब्द:	पर्यटन, सांस्कृतिक व्यवसायीकरण, नारीवादी परिप्रेक्ष्य, आर्थिक रिसाव, आगरा।	

1. परिचय एवं पृष्ठभूमि : मानव सभ्यता के क्रमिक विकास में यात्राओं और देशाटन का सदैव एक विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व रहा है, परंतु समकालीन वैश्वीकरण के दौर में पर्यटन का स्वरूप आमूल–चूल रूप से परिवर्तित हो चुका है। आधुनिक समाजशास्त्रीय विमर्श में, पर्यटन अब केवल विश्राम या मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह एक अत्यंत शक्तिशाली और परिवर्तनकारी सामाजिक संस्था का रूप धारण कर चुका है। उपभोक्तावादी संस्कृति और पूंजीवादी बाजारवाद के अप्रत्याशित प्रसार ने पारंपरिक तीर्थाटन या सांस्कृतिक यात्राओं को 'मास टूरिज्म' के एक आक्रामक वैश्विक उद्योग में तब्दील कर दिया है। यह उद्योग एक ओर जहाँ विभिन्न सभ्यताओं और समाजों के मध्य जीवंत संवाद का एक सशक्त सेतु है, वहीं दूसरी ओर यह स्थानीय सांस्कृतिक अस्मिता और स्वायत्तता के समक्ष एक गंभीर अस्तित्वगत संकट भी प्रस्तुत कर रहा है।

भारत जैसे बहुलवादी और सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण देश में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पर्यटन की जब भी विवेचना होती है, तो 'आगरा' महानगर का नाम वैश्विक पटल पर सर्वोपरि आता है। ताजमहल, आगरा किला और फतेहपुर सीकरी जैसे स्मारकों की उपस्थिति ने आगरा को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का एक विशाल केंद्र बना दिया है। समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार, पर्यटन मूलतः सामाजिक समानता, समावेशिता और व्यापक जन–कल्याण की भावना पर आधारित एक लोकतांत्रिक संस्था होनी चाहिए। एक न्यायपूर्ण पर्यटन व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि इसके आर्थिक व सामाजिक लाभों का संकेन्द्रण केवल बाह्य कॉरपोरेट शक्तियों तक सीमित न रहे, अपितु इसका समतामूलक वितरण आगरा के ताजगंज, पुरानी मंडी और किनारी बाजार जैसे क्षेत्रों में रहने वाले अनौपचारिक श्रमिकों, शिल्पकारों और हाशिए पर स्थित वर्गों तक भी अनिवार्य रूप से हो।

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में, हम आगरा में 'ग्लोकलाइजेशन' (वैश्विक और स्थानीय का अंतर्संबंध) की एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया देखते हैं। ग्लोकलाइजेशन की इस आंधी में स्थानीय मुगलकालीन कलाओं, हस्तशिल्प और

लोक–परंपराओं को उनके विशुद्ध स्वरूप में संरक्षित रखने के बजाय, उन्हें अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की उपभोगवादी अपेक्षाओं के अनुरूप लगातार अनुकूलित या 'री–पैकेज' किया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, पर्यटन आगरा की सूक्ष्म सामाजिक संस्थाओं–विशेषकर परिवार, नातेदारी और लैंगिक भूमिकाओं को भी गहरे स्तर पर पुनर्गठित कर रहा है। पर्यटन से जुड़े अनौपचारिक क्षेत्रों (जैसे होमस्टे, हस्तशिल्प और खुदरा व्यापार) में महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भागीदारी ने पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती दी है, जो कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एक अत्यंत महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन है। जब किसी ऐतिहासिक शहर में पर्यटन का इतना तीव्र और बाजारीकृत विकास होता है, तो वह वहाँ के निवासियों की जीवनशैली, मूल्यों और सामाजिक संबंधों को अल्पकालिक और दीर्घकालिक–दोनों ही रूपों में गहराई से प्रभावित करता है। अतः इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आगरा महानगर की इसी द्वंद्वात्मक और बहुआयामी प्रक्रिया का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से सूक्ष्म विश्लेषण करना है, ताकि पर्यटन के आर्थिक विकास और स्थानीय सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण के मध्य एक स्थायी संतुलन स्थापित किया जा सके।

1.1. अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं:

- ❖ विश्व धरोहर नगरी आगरा में 'मास टूरिज्म' के निरंतर विस्तार के कारण स्थानीय समुदाय (विशेषकर शिल्पकार वर्ग) की संस्कृति में आने वाले आंतरिक संरचनात्मक परिवर्तनों तथा उनके दैनिक सामाजिक व्यवहार में होने वाले व्यावहारिक बदलावों का सूक्ष्म–समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
- ❖ आगरा में पर्यटन जनित नव–उदारवादी प्रक्रियाओं के फलस्वरूप, स्थानीय समाज के विभिन्न समूहों, मौलिक सामाजिक संस्थाओं (जैसे परिवार एवं विवाह) तथा विशेष रूप से 'लैंगिक भूमिकाओं' और नातेदारी के बदलते प्रतिमानों का गहन विश्लेषण करना।
- ❖ आगरा में पर्यटन से उत्पन्न होने वाले सकारात्मक पक्षों तथा नकारात्मक पक्षों के मध्य एक समतामूलक और व्यावहारिक संतुलन स्थापित करने हेतु समाजशास्त्रीय उपायों की खोज करना।

2. शोध साहित्य की समीक्षा : पर्यटन के बहुआयामी सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों को गहराई से समझने के लिए वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय (आगरा के विशेष संदर्भ में) समकालीन साहित्य की समीक्षा अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समाजशास्त्रीय विमर्श में, पर्यटन केवल एक आर्थिक गतिविधि न रहकर स्थानीय समुदायों के अस्तित्व और उनकी सांस्कृतिक पहचान को विखंडित या संरक्षित करने वाला एक अत्यंत सशक्त कारक बन चुका है।

अमागोलो और चिगुवी (2023) ने अपने शोध पत्र 'फैक्टर्स एंड चैलेंजेस अफेक्टिंग द टूरिज्म सेक्टर' में विकासशील देशों के पर्यटन क्षेत्र का एक गहन समाजशास्त्रीय और आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि पर्यटन क्षेत्र का विकास केवल बाह्य पर्यटकों के आगमन पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह तभी सफल होता है जब स्थानीय नागरिकों की इसमें सक्रिय और समतामूलक भागीदारी हो। आगरा महानगर के संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ प्रतिदिन हजारों पर्यटकों के आगमन के बावजूद, ताजगंज और आस–पास के क्षेत्रों के आम निवासियों की मुख्यधारा के पर्यटन उद्योग में भागीदारी अत्यंत सीमित और हाशिए पर है। यह दर्शाता है कि जब तक पर्यटन नीतियों में स्थानीय समुदाय को सशक्त रूप से एकीकृत नहीं किया जाता, तब तक इसके दूरगामी सामाजिक लाभ प्राप्त नहीं किए जा सकते।

अनस (2024) ने इंडोनेशिया के सुंबावा जिले का अध्ययन करते हुए 'लीवरेजिंग लोकल विजडम एज सोशल कैपिटल फॉर सस्टेनेबल टूरिज्म' में एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि स्थानीय ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराएँ पर्यटन के सतत विकास के लिए 'सामाजिक पूंजी' के रूप में कार्य करती हैं। आगरा के परिप्रेक्ष्य में, पीढ़ियों से चली आ रही मुगलकालीन 'पच्चीकारी' और 'जरदोजी' की हस्तशिल्प कलाएँ आगरा की अमूल्य 'सामाजिक पूंजी' हैं। यद्यपि इन कलाओं में सामुदायिक सशक्तिकरण की अपार क्षमता है, तथापि मध्यस्थों के वर्चस्व और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के कारण इस सामाजिक पूंजी का पूर्ण और न्यायपूर्ण दोहन स्थानीय शिल्पकारों के पक्ष में नहीं हो पाता है।

भारतीय पर्यटन के एक अन्य महत्वपूर्ण और आलोचनात्मक पक्ष को जायसवाल और राव (2024) ने 'इकोनॉमिक लीकेज इन द इंडियन टूरिज्म सेक्टरः ए केस फॉर इन्क्लूसिव सप्लाई चेन्स' में रेखांकित किया है। उन्होंने 'आर्थिक रिसाव' की अवधारणा का प्रयोग करते हुए यह सिद्ध किया है कि भारत के प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर पर्यटकों द्वारा खर्च किए गए धन का लगभग 40–50 प्रतिशत हिस्सा स्थानीय अर्थव्यवस्था में रुकने के बजाय बहुराष्ट्रीय कॉरपोरेट होटलों और बाहरी एजेंसियों के पास चला जाता है। आगरा के पर्यटन उद्योग में यह आर्थिक रिसाव अत्यंत स्पष्ट है, जहाँ बड़े सितारा होटलों का वर्चस्व है और अनौपचारिक पर्यटन श्रमिक (जैसे गाइड, फेरीवाले और छोटे शिल्पकार) आर्थिक तंगी और शोषण का सामना करते हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन के द्वंद्वात्मक पक्ष को उजागर करते हुए शाह लाल मोहम्मद (2016) ने 'पॉजिटिव एंड नेगेटिव इम्पैक्ट्स ऑफ टूरिज्म ऑन कल्चर' में यह तर्क दिया है कि बाहरी संस्कृतियों के निरंतर संपर्क से स्थानीय

मूल्यों में होने वाले व्यावहारिक बदलावों को केवल श्वेत–श्याम (सकारात्मक या नकारात्मक) रूप में नहीं मापा जा सकता। इसके मूल्यांकन के लिए एक बहुआयामी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

2.1. शोध अंतरालः यद्यपि वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के वृहद–आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर पर्याप्त शोध किए गए हैं, तथापि आगरा शहर के ऐतिहासिक स्मारकों से इतर, वहाँ के स्थानीय निवासियों–विशेषकर पर्यटन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आश्रित अनौपचारिक श्रमिकों, महिला कारीगरों और हस्तशिल्पियों–की सूक्ष्म सामाजिक संस्थाओं में हो रहे रोजमर्रा के बदलावों पर समाजशास्त्रीय शोध का नितांत अभाव है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी अकादमिक अंतराल को भरने का एक तार्किक प्रयास करता है।

3. शोध पद्धति : प्रस्तुत शोध पत्र की प्रकृति मूलतः वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। आगरा शहर में पर्यटन और सामाजिक संरचना के मध्य अंतर्निहित जटिलताओं को समझने तथा अध्ययन के उद्देश्यों की वैज्ञानिक पूर्ति हेतु, यह शोध पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। तथ्य संकलन के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित समाजशास्त्रीय पत्रिकाओं, प्रकाशित अकादमिक लेखों और पर्यटन से संबंधित प्रामाणिक रिपोर्ट्स को आधार बनाया गया है। इस अध्ययन में गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए एकत्रित साहित्य का गहन विषयगत विश्लेषण किया गया है।

4. आगरा के पर्यटन पर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण : पर्यटन जैसी बहुआयामी परिघटना को सतही आर्थिक आँकड़ों के परे जाकर गहराई से समझने के लिए, इसे समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करना अनिवार्य है।

4.1. संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण (AGIL प्रतिमान): प्रसिद्ध समाजशास्त्री टैल्कॉट पार्सन्स के संरचनात्मक–कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य के अनुसार, समाज एक जटिल व्यवस्था है जिसके विभिन्न अंग इसके संतुलन को बनाए रखते हैं। पार्सन्स के 'AGIL मॉडल' के दृष्टिकोण से देखने पर, पर्यटन आगरा के पारंपरिक समाज को वैश्वीकरण के तीव्र परिवर्तनों के प्रति 'अनुकूलन' करना सिखाता है।

यह विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्कृतियों के साथ आगरा के स्थानीय निवासियों के 'एकीकरण' को सुदृढ़ करता है। इसके अतिरिक्त, पर्यटन ही वह प्रमुख प्रेरक बल है जिसके कारण आगरा की विलुप्त होती मुगलकालीन कलाओं (जैसे पच्चीकारी और जरदोजी) को वर्तमान बाजार व्यवस्था में 'बनाए रखने' में अप्रत्यक्ष मदद मिली है।

4.2. मार्क्सवादी दृष्टिकोण : अलगाव और आर्थिक रिसावः कार्ल मार्क्स के विचारों पर आधारित यह परिप्रेक्ष्य आगरा के पर्यटन को शक्ति संबंधों और संसाधनों के असमान वितरण के संदर्भ में विश्लेषित करता है। यह परिप्रेक्ष्य आगरा के पर्यटन उद्योग में व्याप्त गहरे अंतर्विरोधों को उजागर करता है। जायसवाल और राव (2024) की 'आर्थिक रिसाव' की अवधारणा यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है।

आगरा में पर्यटकों (विशेषकर विदेशी पर्यटकों) द्वारा किया गया अधिकांश खर्च फतेहाबाद रोड स्थित बड़े बहुराष्ट्रीय होटलों और ट्रैवल एजेंसियों में सिमट जाता है, जबकि ताजगंज और पुरानी मंडी की तंग गलियों में मार्बल का सूक्ष्म काम करने वाले वास्तविक कारीगर शोषण का शिकार होते हैं।

मध्यस्थों और कमीशनखोरों के वर्चस्व के कारण कारीगर स्वयं अपनी ही कला और संस्कृति से 'अलगाव' महसूस करते हैं। उनकी पीढ़ियों पुरानी कला अब उनके स्वयं के आत्मिक संतोष या सांस्कृतिक गौरव के लिए नहीं, बल्कि बाहरी पूंजीपतियों के मुनाफे और पर्यटकों के उपभोग की एक 'वस्तु' मात्र बनकर रह गई है।

4.3. आगरा की सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तनः पर्यटन केवल एक बाह्य आर्थिक परिघटना नहीं है, बल्कि यह आगरा के स्थानीय समाज के आंतरिक ताने–बाने और उसकी मौलिक सामाजिक संस्थाओं को पुनर्गठित करने वाली एक अत्यंत प्रभावी प्रक्रिया है।

4.4. लैंगिक भूमिकाओं में गतिशीलताः पर्यटन उद्योग ने आगरा में महिलाओं के लिए रोजगार और उद्यमिता के नए, यद्यपि अनौपचारिक, अवसर सृजित किए हैं। पेठा उद्योग की पैकेजिंग, जरदोजी की बारीक कढ़ाई, और हाल ही में 'होमस्टे' के प्रबंधन में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। यह नवीन आर्थिक आत्मनिर्भरता आगरा के पारंपरिक पितृसत्तात्मक ढाँचे को तार्किक रूप से चुनौती देती है। इसके परिणामस्वरूप, पारिवारिक निर्णय–प्रक्रिया में महिलाओं की सौदेबाजी की क्षमता (Bargaining Power) मजबूत हुई है, जो समाज में लैंगिक समानता के नए प्रतिमान स्थापित कर रही है।

4.5. पारिवारिक संरचना का पुनर्गठनः ऐतिहासिक रूप से आगरा के पुराने शहर में संयुक्त परिवार प्रणाली हस्तशिल्प उत्पादन का मुख्य आधार रही है। परंतु, पर्यटन के विस्तार ने टूर–गाइड, फोटोग्राफी, और हैंडीक्राफ्ट की स्वतंत्र दुकानों जैसे आजीविका के नए और वैयक्तिक स्रोत उत्पन्न किए हैं। जब युवा पीढ़ी इन स्वतंत्र व्यवसायों में संलग्न होती है, तो उनकी संयुक्त परिवार पर पारंपरिक आर्थिक निर्भरता कम होने लगती है। इसके परिणामस्वरूप, आगरा के समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन और एकल परिवारों का तेजी से विकास हो रहा है।

4.6. अनौपचारिक पर्यटन श्रमिक और पीढ़ीगत संघर्षः आगरा में टूर–गाइडों, फेरीवालों, वाहन चालकों और अनौपचारिक मध्यस्थों का एक बहुत बड़ा वर्ग प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर आश्रित है। पर्यटन क्षेत्र से जुड़े इन युवाओं

की त्वरित आर्थिक स्वतंत्रता के कारण पारंपरिक सत्ता, जो पूर्व में परिवार के बुजुर्गों के पास हुआ करती थी, अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र युवाओं के पास स्थानांतरित हो रही है। इस सत्ता–हस्तांतरण से आगरा के परिवारों और समाज में एक नया पीढ़ीगत वैचारिक संघर्ष जन्म ले रहा है। इसके साथ ही, आर्थिक प्रतिस्पर्धा के कारण पारंपरिक सामुदायिक एकजुटता में शिथिलता आ रही है और सामाजिक संबंधों का तेजी से 'औपचारिकरण' हो रहा है।

5. आगरा पर पर्यटन के सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव; एक द्वंदात्मक परिप्रेक्ष्य : पर्यटन एक अत्यंत गतिशील और द्वंदात्मक प्रक्रिया है, जिसके दोनों प्रकार के परिणाम आगरा के स्थानीय समाज में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं:

5.1. सकारात्मक प्रभाव (Positive Impacts):

- **मुगलकालीन लोक कला तथा हस्तशिल्प का संरक्षण–** आगरा में पच्चीकारी, जरदोजी और चर्म–शिल्प का अस्तित्व आज मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय पर्यटन की माँग के कारण ही सुरक्षित है। पर्यटक जब इन हस्तनिर्मित वस्तुओं को खरीदते हैं, तो इससे स्थानीय कलाकारों को रोजगार प्राप्त होता है और विलुप्त होती कलाओं को नवजीवन मिलता है।
- **सांस्कृतिक बहुलवाद–** आगरा के नागरिक प्रतिदिन विश्व के विभिन्न हिस्सों से आए पर्यटकों के संपर्क में आते हैं। इस निरंतर सांस्कृतिक अंतक्रिया (Cultural Interaction) ने शहर में एक बहुसांस्कृतिक और सहिष्णु वातावरण का निर्माण किया है, जो सामाजिक जड़ता को तोड़ता है।
- **ढांचागत विकास–** 'ताज ट्रेपेजियम जोन' (TTZ) और पर्यटन के दबाव के कारण ही आगरा में पर्यावरण संरक्षण, बेहतर परिवहन (एक्सप्रेस–वे, मेट्रो) और नागरिक सुविधाओं का जो तीव्र विकास हुआ है, उसका अप्रत्यक्ष लाभ स्थानीय निवासियों के जीवन स्तर को सुधारने में भी मिल रहा है।

5.1. नकारात्मक प्रभाव एवं स्थानीय अस्मिता का अस्तित्वगत संकट: यद्यपि पर्यटन समावेशिता को बढ़ावा देता है, तथापि नव–उदारवादी पर्यटन नीतियों ने आगरा की स्थानीय अस्मिता और सांस्कृतिक मौलिकता के समक्ष एक गहरा अस्तित्वगत संकट खड़ा कर दिया है:

- **सांस्कृतिक व्यवसायीकरण (Cultural Commodification)–** आगरा में स्थानीय संस्कृति तेजी से एक 'बिकाऊ वस्तु' में बदल रही है। बड़े एम्पोरियम और बाजारों में मुगलकालीन इतिहास, कला और वास्तुकला को केवल एक व्यावसायिक उत्पाद बनाकर बेचा जा रहा है, जिससे इसकी ऐतिहासिक गरिमा और पवित्रता का क्षरण हो रहा है।
- **'मंचित मौलिकता' का निर्माण–** समाजशास्त्री डीन मैककैनेल की अवधारणा 'स्टेज्ड ऑथेंटिसिटी' आगरा में पूर्णतः चरितार्थ होती है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए स्थानीय संस्कृति का एक कृत्रिम या 'मंचित' स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है। असली कारीगर ताजगंज की तंग और अभावग्रस्त गलियों में काम करते हैं, जबकि मुख्य मार्गों पर जो भव्यता दिखाई जाती है, वह केवल 'पर्यटक दृष्टि' को भुनाने का एक भ्रम है।
- **सांस्कृतिक अलगाव–** वैश्वीकरण और अति–पर्यटन के कारण आगरा के स्थानीय निवासियों का अपने ही ऐतिहासिक स्मारकों से अलगाव हो गया है। टिकटों की उच्च दरें, वीआईपी संस्कृति और भारी भीड़ के कारण आगरा का आम नागरिक अब ताजमहल या आगरा किले से वह भावनात्मक और सामुदायिक जुड़ाव महसूस नहीं कर पाता, जो कुछ दशकों पूर्व हुआ करता था।
- **प्रदर्शन प्रभाव–** पर्यटकों की उच्च, उपभोक्तावादी और स्वच्छंद जीवनशैली को देखकर आगरा के स्थानीय युवाओं में 'डेमोंस्ट्रेशन इफेक्ट' तेजी से फैलता है। वे अपनी वास्तविक आर्थिक स्थिति को दरकिनार कर पश्चिमी जीवनशैली का अंधानुकरण करने लगते हैं, जिससे पीढ़ियों के बीच वैचारिक अंतर बढ़ता है और स्थानीय मूल्यों का ह्रास होता है।

6. नीतिगत एवं समाजशास्त्रीय सुझाव : यद्यपि पर्यटन आगरा की आर्थिक जीवनरेखा है, तथापि अपनी स्थानीय परंपराओं को उनके विशुद्ध रूप में जीवित रखना भी प्राथमिक दायित्व है। इसके लिए निम्नलिखित कदम आवश्यक हैं:

- **समुदाय–आधारित पर्यटन–** आगरा में 'हेरिटेज वॉक' (Heritage Walks) जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिसका सीधा संचालन पुराने शहर (जैसे किनारी बाजार, रावतपाड़ा) और ताजगंज के स्थानीय निवासियों द्वारा हो। इससे पर्यटन का विकेंद्रीकरण होगा और आर्थिक लाभ सीधे निचले स्तर तक पहुँचेगा।
- **आर्थिक रिसाव पर नियंत्रण–** पच्चीकारी और जरदोजी के कारीगरों को मध्यस्थों के शोषण से मुक्त कराकर, पर्यटकों से उनके सीधे संवाद के लिए स्थानीय सहकारी समितियाँ बनाई जानी चाहिए।
- **वहन क्षमता का प्रबंधन–** मैत्रा और जैन (2024) के सुझावों के अनुरूप, अति–पर्यटन को रोकने के लिए 'डिजिटल क्राउडिंग मैनेजमेंट' का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि स्मारकों और शहर के बुनियादी ढाँचे पर अनावश्यक पर्यावरणीय और सामाजिक दबाव न पड़े।

निष्कर्ष : समग्र समाजशास्त्रीय विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि पर्यटन, आगरा महानगर की स्थानीय संस्कृति और सामाजिक संरचना पर अत्यंत गहरा, परिवर्तनकारी और द्वंद्वात्मक प्रभाव डालता है। एक ओर, यह आगरा के वैश्विक हस्तशिल्प को संरक्षित कर रहा है, महिलाओं को रोजगार देकर उन्हें पितृसत्तात्मक बंधनों से मुक्त कर रहा है और ढांचागत विकास को उत्प्रेरित कर रहा है। परंतु दूसरी ओर, अपने आक्रामक बाजारवादी स्वरूप के कारण यह स्थानीय कारीगरों के आर्थिक शोषण, 'मंचित मौलिकता' के निर्माण और गहरे सांस्कृतिक अलगाव जैसी गंभीर सामाजिक समस्याएँ भी उत्पन्न कर रहा है।

अतः यह नितांत आवश्यक है कि आगरा में पर्यटन का विकास केवल स्मारकों और बहुराष्ट्रीय कॉरपोरेट होटलों के इर्द–गिर्द केंद्रित न होकर, स्थानीय समुदाय (विशेषकर अनौपचारिक पर्यटन श्रमिकों और शिल्पकारों) के कल्याण, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक संरक्षण को केंद्र में रखकर किया जाए। पर्यटन विकास की नीतियाँ जब तक समतामूलक और सतत विकास के सिद्धांतों पर आधारित नहीं होंगी, तब तक आगरा की वास्तविक और जीवंत सांस्कृतिक अस्मिता को वैश्वीकरण के प्रभावों से सुरक्षित नहीं रखा जा सकेगा।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष न केवल अकादमिक विमर्श के लिए प्रासंगिक हैं, बल्कि उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, आगरा विकास प्राधिकरण और स्थानीय प्रशासन के लिए भावी नीति–निर्माण हेतु एक महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश का कार्य भी कर सकते हैं। इन समाजशास्त्रीय अंतर्दृष्टियों और सुझावों को अपनी पर्यटन नीतियां में एकीकृत करके, प्रशासन एक ऐसा 'समावेशी पर्यटन मॉडल' विकसित कर सकता है, जो आर्थिक विकास के साथ–साथ आगरा की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर और स्थानीय शिल्पकारों के अधिकारों को भी दीर्घकालिक रूप से संरक्षित करे।

स्रोत एवं संदर्भ :

1. Alaimo, L. S., et al. (2026). The impact of greenwashing on local economies and tourism. Journal of Sustainable Tourism, 34(1), 45-62.
2. Amagolo, A. G., & Chiguvi, D. (2023). Factors and challenges affecting the tourism sector: An in-depth analysis of Botswana's tourism. Expert Journal of Marketing, 11(2), 118-135.
3. Anas, M. (2024). Leveraging local wisdom as social capital for sustainable tourism: A case study of the Ponan tradition in Poto Village, Sumbawa, Indonesia. Tourism Spectrum: Diversity and Dynamics, 1(2). https://doi.org/10.56578/Tsdd010204
4. Cohen, E. (1984). The sociology of tourism: Approaches, issues, and findings. Annual Review of Sociology, 10, 373-392.
5. Jaiswal, P., & Rao, K. (2024). Economic leakage in the Indian tourism sector: A case for inclusive supply chains. Asian Journal of Tourism Research, 12(3), 210-228.
6. MacCannell, D. (1973). Staged authenticity: Arrangements of social space in tourist settings. American Journal of Sociology, 79(3), 589-603.
7. Maitra, S., & Jain, R. (2024). Digital crowding management and the carrying capacity of heritage sites in India. Heritage Tourism & Conservation, 8(4), 112-130.
8. Mohammad, S. (2016). Positive and negative impacts of tourism on culture: A critical review of examples from the contemporary literature. Journal of Tourism, Hospitality and Sports, 20, 30-34.
9. Richards, G. (2025). Cultural tourism: An integrative review. Tourism Studies, 25(1), 15-32.
10. भाटिया, ए.के. (2019). पर्यटन विकास एवं प्रबंधन, स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
11. सिंह, योगेन्द्र (2004). भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन्स।

=====

आलेख उद्धरित करें :	लोधी, कृपान्ती एवं डॉ. एकता (2026)। पर्यटन का स्थानीय संस्कृति और सामाजिक संरचना पर प्रभाव : आगरा महानगर के विशेष संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वॉल्यूम–2, अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2026, पृष्ठ 83–87। https://doi.org/10.5281/zenodo.23016581